

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 1, ऐतिहासिक परिचय, जेन्सन, ईश्वर का रहस्योद्घाटन, ज्ञानोदय, और ईसाई प्रतिक्रिया

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1 है, ऐतिहासिक परिचय, जेन्सन, ईश्वर का रहस्योद्घाटन, ज्ञानोदय और ईसाई प्रतिक्रिया।

हम आपको ईश्वर और पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों पर हमारे व्याख्यानों में आमंत्रित करते हैं।

कृपया आरंभिक प्रार्थना में मेरे साथ शामिल हों। दयालु पिता, हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने अपना पवित्र मुँह खोला है और अपना वचन बोला है। इन व्याख्यानों के दौरान हमें प्रोत्साहित करें; हम आपसे सीखने, आपके रहस्योद्घाटन में आनन्दित होने, सामान्य और विशेष दोनों तरह से, और विशेष रूप से आपके और आपके पवित्र वचन के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने के लिए प्रार्थना करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें आशीर्वाद दें। आमीन।

मेरे पास इन व्याख्यानों का बाइबिल और ऐतिहासिक परिचय है, जो परमेश्वर के स्वयं को प्रकट करने, स्वयं को ज्ञात करने के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसका समापन उसके द्वारा विशेष रूप से अपने लिखित वचन में स्वयं को ज्ञात करने में होगा।

ऐतिहासिक परिचय पीटर जेन्सन से आया है, जो एक प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई चर्च नेता और इंजील किस्म के धर्मशास्त्री हैं। उन्होंने ईश्वर के रहस्योद्घाटन पर ईसाई धर्मशास्त्र की रूपरेखा पुस्तक लिखी। वे कहते हैं कि मेरे पास एक किताब है जो, जहाँ तक मुझे याद है, मेरे द्वारा पढ़ी गई पहली आलोचनात्मक रचना थी।

यह जोसेफ मैककेब द्वारा 18वीं सदी के महान फ्रांसीसी तर्कवादी वोल्टेयर की रचनाओं का चयन और अनुवाद है। जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह थी बाइबिल और ईसाई धर्म पर वोल्टेयर के हमले की प्रतिभा। मैं दोनों के लिए एक पारंपरिक सम्मान के साथ बड़ा हुआ था, और यह वोल्टेयर की अवमानना से बमुश्किल बच पाया।

उद्धरण के भीतर एक उद्धरण, वॉल्टेयर को उद्धृत करते हुए, वह महान ईश्वर मेरी बात सुन सकता है, वह ईश्वर जो निश्चित रूप से किसी लड़की से पैदा नहीं हो सकता, न ही फाँसी पर मर सकता है, न ही पेस्ट के एक निवाले में खाया जा सकता है, न ही इस पुस्तक को इसके विरोधाभासों, मूर्खताओं और भयावहताओं से प्रेरित कर सकता है। सभी दुनियाओं के निर्माता, इस ईश्वर को उन ईसाइयों के संप्रदाय पर दया आनी चाहिए जो उसकी निंदा करते हैं। वाह, उद्धरण समाप्त।

वोल्टेयर ईसाई धर्म के सिद्धांतों की मूर्खता के लिए निंदा करने से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने उतनी ही गंभीरता से धर्मग्रंथों की भी आलोचना की, न केवल उनकी नैतिकता पर बल्कि उनकी विश्वसनीयता पर भी हमला किया। उन्होंने कहा, "मैं रसायन विज्ञान में इतना पारंगत नहीं हूँ कि सोने के बछड़े के साथ खुशी से पेश आ सकूँ, जिसके बारे में एक्सोडस का कहना है कि वह एक दिन में बना था और जिसे मूसा ने राख में बदल दिया था। क्या वे दो चमत्कार हैं या मानव कला की दो संभावनाएँ हैं?"

ज्ञानोदय का सामना करना। हालांकि उस समय मुझे यह पता नहीं था, जेन्सन कहते हैं, मैं आधुनिक इतिहास के महान बौद्धिक आंदोलनों में से एक, ज्ञानोदय के ज्ञान में शामिल हो रहा था।

वोल्टेयर जैसे साहित्यिक गुरु के हाथों, मैंने 200 से अधिक वर्षों तक शत्रुतापूर्ण तरीके से विश्वास की जांच करने वाली आलोचना की शक्ति का अनुभव किया। वोल्टेयर के समय तक ईसाई सिद्धांत की विशेषता वाले कई मतभेदों के बावजूद, ईसाइयों के बीच इस बात पर मौलिक सहमति थी कि बाइबिल एकमात्र सच्चे ईश्वर से एक विशेष रहस्योद्घाटन था और इसे सही मायने में ईश्वर का वचन कहा जाता है। यह भी सहमति थी कि निर्मित दुनिया के माध्यम से ईश्वर का एक सामान्य रहस्योद्घाटन मौजूद है, हालाँकि इस बात पर राय अलग-अलग थी कि यह किस हद तक सच है।

वास्तव में, बाइबिल एक धार्मिक कार्य है, और इसे पापी मनुष्य समझ सकते हैं। किसी भी मामले में, हालांकि, ईसाई धर्म को पापियों को ईश्वर के साथ संबंध में लाने के लिए एक विलक्षण आधिकारिक और बचाने वाली क्षमता रखने वाला माना जाता था। अपने हिस्से के लिए, वोल्टेयर नास्तिक नहीं थे।

जब उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत किया, तो उनका तर्क रहस्योद्घाटन पर आधारित नहीं था, बल्कि एक प्रकार के प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर आधारित था। हम यहाँ एक सख्त दार्शनिक भाषा में बात कर रहे हैं। वोल्टेयर को उद्धृत करते हुए, हम यहाँ एक सख्त दार्शनिक भाषा में बात कर रहे हैं।

हमारा काम उन लोगों की ओर देखना भी नहीं है जो रहस्योद्घाटन की भाषा का उपयोग करते हैं। उद्घरण समाप्त करें। ज्ञानोदय द्वारा उठाए गए प्रश्न ये थे।

क्या ईसाई धर्म में ईश्वर से कोई विशेष रहस्योद्घाटन है? क्या धर्म को मानवीय तर्क के दायरे में रखना सबसे अच्छा नहीं होगा? मानवीय तर्क का उपयोग करके हम ईश्वर के बारे में क्या सीख सकते हैं? क्या हम विश्वास कर सकते हैं कि बाइबिल और चर्च के इतिहास के चमत्कार आलोचनात्मक इतिहास के प्रकाश में प्रामाणिक हैं? क्या हम इस दावे को विश्वसनीय मान सकते हैं कि बाइबिल प्रेरित है, जबकि इसमें इतनी सारी असंभव कहानियाँ और अनैतिक शिक्षाएँ हैं? वोल्टेयर जैसे विचारकों के आलोचनात्मक तर्कों ने ईसाई शिक्षा की विश्वसनीयता को बहुत कम कर दिया है। विडंबना यह है कि हालाँकि हम अभी भी किसी भी आधिकारिक पाठ्यपुस्तक को

बाइबल कहते हैं, लेकिन यह प्रयोग केवल इसकी पूर्व अत्यधिक लोकप्रियता के अवशेष को दर्शाता है। जब वास्तविक बाइबल की बात आती है, तो वोल्टेयर की राय काफी हद तक विजयी रही है।

पीटर जेन्सन लिखते हैं, जब बाद में मैंने धर्मशास्त्र के अध्ययन की ओर रुख किया, तो मुझे प्राकृतिक धर्मशास्त्र के उपयोग पर आपत्तियों के एक शक्तिशाली समूह से परिचित कराया गया। डेविड ह्यूम ने 1711 से 1776 तक प्राकृतिक और प्रकट धर्मशास्त्र दोनों पर हमला किया। उन्होंने दुनिया से ईश्वर के लिए तर्क, दुनिया से ईश्वर के लिए तर्क को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, कि इसमें कोई प्रेरक शक्ति थी।

इस निष्कर्ष पर पहुँचने से कहीं दूर कि स्वर्ग और पृथ्वी का एक ही संप्रभु निर्माता है, यह निष्कर्ष निकालना अधिक न्यायसंगत था कि बहुदेववाद सत्य है या कि ईश्वर की शक्ति दुर्बलता द्वारा सीमित है। उन्होंने तर्क दिया कि दुनिया को इस रूप में समझा जा सकता है, और यहाँ हम संशयवादी, स्कॉटिश संशयवादी डेविड ह्यूम को उद्धृत करते हैं, "दुनिया को एक उच्च मानक की तुलना में बहुत दोषपूर्ण और अपूर्ण माना जाता है, और यह केवल कुछ शिशु देवता का पहला असभ्य निबंध था, जिसने बाद में इसे त्याग दिया, अपने लंगड़े प्रदर्शन पर शर्मिंदा हुआ। यह केवल कुछ आश्रित निम्न देवता का काम है और अपने वरिष्ठों के लिए उपहास का विषय है। यह किसी अलौकिक देवता, सुपर वार्षिक देवता में बुढ़ापे और बुढ़ापे का उत्पादन है, और उसकी मृत्यु के बाद से, यह उससे प्राप्त पहले आवेग और सक्रिय बल से रोमांच पर चला गया है।"

वाह। ह्यूम वोल्टेयर की तुलना में रहस्योद्घाटन के दावों से भी कम संतुष्ट थे।

उन्होंने अपना हमला चमत्कारों पर केंद्रित किया क्योंकि वे प्रकट धर्म की विषय-वस्तु और औचित्य दोनों का अभिन्न अंग थे। बाइबिल में चमत्कार इतने प्रचलित हैं, और धर्म को मान्य करने के साधन के रूप में चमत्कारों के लिए ईसाई अपील इतनी बार-बार थी, कि दार्शनिक जांच के लिए चमत्कारों का चयन विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। ह्यूम के दृष्टिकोण से, चमत्कार मूल रूप से असंभव थे क्योंकि वे प्रकृति के सुसंगत नियमों को तोड़ते थे।

इसलिए, उन्होंने तर्क दिया कि इतिहासकार के लिए चमत्कार पर विश्वास करने के लिए मानवीय साक्ष्य के माध्यम से कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं हो सकते। उन्होंने चमत्कारों पर अपने प्रवचन का समापन ईसाइयों को इस धारणा पर टिके रहने की सलाह देकर किया कि उनका धर्म विश्वास पर आधारित है, तर्क पर नहीं, और उन्होंने तर्क से धर्म को एक ऐसे परीक्षण के लिए उजागर करने की अपील की जो सहन करना बहुत कठिन है। तीखी विडंबना के साथ, वह इन शब्दों के साथ समाप्त होता है, एक बार फिर ह्यूम को उद्धृत करते हुए: ईसाई धर्म न केवल शुरू में चमत्कारों से जुड़ा था, बल्कि आज भी कोई भी समझदार व्यक्ति बिना चमत्कार के इस पर विश्वास नहीं कर सकता है।

केवल तर्क ही हमें इसकी सत्यता के बारे में आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, और जो कोई भी इसे स्वीकार करने के लिए आस्था से प्रेरित होता है, वह अपने व्यक्तित्व में एक निरंतर चमत्कार के प्रति सचेत होता है, जो उसकी समझ के सभी सिद्धांतों को उलट देता है और उसे

उस बात पर विश्वास करने का दृढ़ संकल्प देता है जो प्रथा और अनुभव के सबसे विपरीत है, उद्धरण समाप्त करें। वाह, क्या मैंने आपका ध्यान आकर्षित किया है? ज्ञानोदय की विजय, रहस्योद्घाटन की इस चर्चा को इतने व्यक्तिगत तरीके से शुरू करने का कारण, पीटर जेन्सन लिखते हैं, यह है कि मेरा अनुभव ज्ञानोदय के प्रमुख परिणामों में से एक को सूक्ष्म रूप में दर्शाता है और इसके बाद कई अन्य सांस्कृतिक आंदोलनों के बावजूद इसके निरंतर महत्व को प्रदर्शित करता है। जब वोल्टेयर के लेखन मेरे हाथों में आए, और बाद में जब मैं ह्यूम के विचारों से मिला, तो वे बहुत चुनौतीपूर्ण थे।

वोल्टेयर ने ईसाई धर्म को इतना हास्यास्पद और संकुचित बना दिया कि इसके प्रति निष्ठा बनाए रखना मुश्किल हो गया। यह कोई संयोग नहीं है कि वोल्टेयर और ह्यूम दोनों ही अपने समय में इतिहासकार के रूप में विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। अलौकिकता-विरोधी एक नया मूड इतिहास के अध्ययन में प्रवेश कर रहा था, और बाइबिल की उत्पत्ति और प्रकृति के बारे में की जा रही आलोचनात्मक जांच के साथ-साथ, पुरानी रूढ़िवादिता को उसकी नींव पर ही चुनौती दी जा रही थी।

ज्ञानोदय के तर्कों को इस चिरस्थायी आकर्षक संदेश द्वारा और भी तीखा कर दिया गया कि मनुष्य ही सभी चीजों का माप है। मानवीय तर्क निर्णय का सिद्धांत था, मानवीय स्वतंत्रता मुख्य गुण थी, तथा अंधविश्वास और निराधार अधिकार के विरुद्ध मानवीय प्रगति कार्यक्रम था। आधुनिकता इन कथनों की सत्यता को पूर्व निर्धारित करती है, तथा कुछ ही समकालीन पश्चिमी व्यक्ति इनके आकर्षक बंधनों से पूरी तरह मुक्त हैं।

ज्ञानोदय के विचारक मानवीय स्वायत्तता के मुद्दे पर चर्च और राज्य के खिलाफ बौद्धिक संघर्ष में शामिल थे। चूंकि चर्च और राज्य दोनों ने ही अपने अधिकार को सही ठहराने के लिए बाइबिल का सहारा लिया, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बाइबिल एक विवादित आधार बन गई। अंत में, पूरा आंदोलन, जिसके वोल्टेयर और ह्यूम दो प्रतिपादक हैं, ने अन्य बातों के अलावा, ईसाई धर्म पर एक आश्चर्यजनक जीत हासिल की है।

ईसाई धर्म ने अपना बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक अधिकार खो दिया, खास तौर पर प्रोटेस्टेंट यूरोप में। बर्नार्ड रहम के फैसले में, उद्धरण, प्राणघातक घाव, बर्नार्ड रहम एक इंजील धर्मशास्त्री थे, प्रोटेस्टेंट रूढ़िवाद पर ज्ञानोदय द्वारा लगाया गया प्राणघातक घाव एक चौंका देने वाला था, और ऐसा घाव जिससे कभी भी पूरी तरह से उबर नहीं पाया, उद्धरण बंद करें। कॉलिन गुंटन, एक अन्य इंजील विचारक, ने देखा कि "आधुनिक संस्कृति के प्रमुख पहलू ईसाई सुसमाचार के इनकार पर आधारित हैं।"

वोल्टेयर और ह्यूम के लेखन 18वीं सदी में कट्टरपंथी विचारों की दो जड़ें थीं, जो 20वीं सदी के अंत में मेरे पास पहुँचीं। बेशक, वे एक बहुत बड़े इतिहास का हिस्सा थे जिसमें लॉक, स्पिनोज़ा, कांट और हेगेल जैसे महान और विविध विचारक शामिल थे। 17वीं सदी में भी, दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों ने ऐसे रुख अपनाने शुरू कर दिए थे जो चर्च और संस्कृति में बाइबिल के अनुसार जगह को मौलिक रूप से बदल देंगे।

इसके अलावा, 19वीं सदी में एक मुठभेड़ हुई; कुछ लोगों ने इसे रहस्योद्घाटन और विज्ञान के बीच युद्ध कहा, जिसका धर्म और रहस्योद्घाटन के अधिकार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। ऐसा प्रतीत होता है कि डार्विनवाद ने बाइबिल की सृष्टि की कहानियों और सृष्टि में व्यवस्था की किसी भी अवधारणा, यानी विशेष और सामान्य रहस्योद्घाटन, दोनों को घातक आघात पहुँचाया है। उसी समय, मानव दुनिया की जटिलता और विविधता ऐसे तरीकों से प्रकट हो रही थी, जिसने तुरंत किसी भी प्रणाली के बारे में सवाल खड़े कर दिए, जो निरपेक्ष या अद्वितीय होने का दावा करती थी।

अंत में, बाइबिल रहस्योद्घाटन, सामान्य रहस्योद्घाटन और प्राकृतिक धर्मशास्त्र जैसे विचारों को न केवल दर्शनशास्त्र से बल्कि इतिहास, नृविज्ञान, धर्म और विज्ञान के अनुशासित अध्ययन से भी शत्रुता का सामना करना पड़ा। रहस्योद्घाटन के साथ सांस्कृतिक मोहभंग की सीमा को पहचानने के लिए हमें केवल मार्क्स, डार्विन और फ्रायड जैसे नामों के बारे में सोचना चाहिए। ज्ञानोदय के संकट के लिए ईसाई प्रतिक्रियाएँ, मैं शर्त लगा सकता हूँ कि आप इसका इंतज़ार कर रहे थे : ईश्वर के एक अद्वितीय रहस्योद्घाटन के अपने दावों पर हमले ने ईसाई धर्म को सबसे संवेदनशील बिंदु पर चुनौती दी।

पश्चिमी बुद्धिजीवियों के बीच, कम से कम, अविश्वास को जन्म देने वाली आलोचनाओं से सहमत होना आम बात रही है। ईसाई धर्म की बौद्धिक स्थिति का खत्म होना आधुनिक काल की एक खास विशेषता है। यह सच है कि पिछले 200 वर्षों के दौरान, चर्च का सबसे बड़ा मिशनरी विस्तार हुआ है।

बाइबल का अनुवाद, प्रकाशन और प्रसार ही एक असाधारण ऐतिहासिक घटना है। साथ ही, इसके पत्रों का निरंतर गहन अकादमिक अध्ययन भी असाधारण है। बाइबल पूरी तरह से बदनाम होने के बजाय, दुनिया में सबसे ज़्यादा बार छपने वाली किताब है।

फिर भी, यह कहा जाना चाहिए कि धर्मनिरपेक्षता द्वारा ईसाई धर्म के बौद्धिक दावों पर डाला गया दबाव बहुत तीव्र रहा है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने सदस्यता के नुकसान और ईसाई समुदाय के भीतर महत्वपूर्ण तनाव और तनाव दोनों में योगदान दिया है। संप्रदायों के बीच विभाजन उन लोगों के बीच विभाजन से कम महत्वपूर्ण हो गया है जिन्होंने आधुनिकता की चुनौती से निपटने के लिए अलग-अलग रणनीति अपनाई है।

एक केंद्रीय मुद्दा बाइबिल का धार्मिक मूल्यांकन रहा है। कुछ लोग पारंपरिक दृष्टिकोण के लिए तर्क देते रहे हैं कि बाइबिल ईश्वर से प्रेरित है और इसलिए, ईश्वर का प्रत्यक्ष आत्म-प्रकाशन है। जैसा कि हमने देखा है, बर्नार्ड रैम्स प्रोटेस्टेंट रूढ़िवाद पर लगाए गए घाव की बात करते हैं, उद्धरण, जिससे कभी भी पूरी तरह से उबर नहीं पाया है, उद्धरण बंद करें।

लेकिन वह यह भी कहते हैं कि मानो चमत्कार से यह उद्धरण बच गया, उद्धरण बंद करें। इस स्थिति के सबसे उल्लेखनीय, लेकिन एकमात्र प्रतिपादक नहीं, उत्तरी अमेरिकी धर्मशास्त्री कार्ल एफएच हेनरी रहे हैं, जिनके रहस्योद्घाटन पर छह खंडों वाले शानदार काम ने गंभीर ध्यान आकर्षित करना जारी रखा है। वह बोस्टन कॉलेज, एक सम्मानित सार्वजनिक अविश्वासी

विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र में पीएचडी अर्जित करने वाले पहले इंजील ईसाइयों में से एक हैं, और फिर क्रिश्चियनिटी टुडे, इंजील थियोलॉजिकल सोसाइटी की स्थापना में उनका जबरदस्त प्रभाव था, और सामान्य तौर पर, यह प्रदर्शित करना कि एक व्यक्ति एक विचारशील इंजील ईसाई और एक विद्वान भी हो सकता है, और बौद्धिक हमलों और इसी तरह की अन्य बातों से नहीं छिप सकता है, और इसके अलावा इसे एक शालीन ईसाई तरीके से कर सकता है, जो कार्ल हेनरी के श्रेय के लिए भी है।

ऐसे रूढ़िवादी ईसाइयों ने खुद को अपने पूर्ववर्तियों के विचारों को सटीक रूप से दोहराने के लिए बाध्य नहीं माना है। शास्त्र के सिद्धांत और इसकी शिक्षा की समझ में विकास हुआ है। उन्होंने प्राचीन दुनिया, इसकी भाषाओं और इसके रीति-रिवाजों से उपलब्ध कराई गई जानकारी के धन को शामिल करने की इच्छा दिखाई है, जिसे ज्ञानोदय के सकारात्मक फलों में से एक माना जा सकता है।

इसके अलावा, रहस्योद्घाटन के ऐसे व्याख्यानों ने हमेशा सामान्य रहस्योद्घाटन की अवधारणा का बचाव किया है। यह आमतौर पर जॉन कैल्विन द्वारा निर्धारित लाइनों का अनुसरण करता है, अर्थात् प्रकृति और हृदय में ईश्वर द्वारा एक रहस्योद्घाटन है, लेकिन इसे दबा दिया जाता है, जिससे प्राप्तकर्ता अज्ञानी और दोषी दोनों बन जाता है। हालांकि, रहस्योद्घाटन के बारे में गंभीर स्तर पर सोचने वाले अधिकांश प्रोटेस्टेंट ने एक अलग रास्ता चुना है।

स्वाभाविक रूप से, वे पवित्रशास्त्र के प्रति गहरा सम्मान रखते हैं, विशेष रूप से यीशु मसीह के बारे में नए नियम की गवाही के प्रति। इस तरह के सम्मान के बिना, किसी भी धार्मिक व्यवस्था के लिए नाममात्र के अर्थ को छोड़कर किसी भी अर्थ में ईसाई बने रहना मुश्किल है। हालांकि, रहस्योद्घाटन के मुख्य स्थान को बाइबल से दूर ले जाने का एक ज़बरदस्त निर्णय लिया गया है।

उदाहरण के लिए, एमिल ब्रूनर "पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के साथ रहस्योद्घाटन के घातक समीकरण" का उल्लेख करते हैं। प्रेरणा को अब आम तौर पर या तो कमजोर तरीके से या प्राप्तकर्ता एजेंट की रोशनी के रूप में समझा जाता है। इन पुनर्व्याख्याओं का मूल उद्देश्य दोहरा है: ईश्वर के रहस्योद्घाटन को बचाना और पवित्रशास्त्र की गवाही को बचाना।

यदि बाइबल में वोल्टेयर जैसे लेखकों द्वारा उजागर किए गए नैतिक और ऐतिहासिक दोष हैं, तो इसे सीधे तौर पर ईश्वर से प्राप्त रहस्योद्घाटन के रूप में नहीं पहचाना जा सकता। इसे ईश्वर का प्रेरित वचन नहीं कहा जाना चाहिए। हालांकि, इस पुनर्व्याख्या को केवल बचाव के रूप में मानना गलत होगा।

इसके कई समर्थकों को, इसने पारंपरिक सिद्धांत के दुर्भाग्यपूर्ण तत्वों को काटकर उनकी जगह ऐसी विशेषताएं लाने का अवसर भी दिया है जो इसमें शामिल मानव और दिव्य व्यक्तियों की प्रकृति के साथ अधिक न्याय करती हैं। इस प्रकार, वे अक्सर बौद्धिकता के रूप में प्रस्तावना प्रकाशन को अस्वीकार करते हैं और दिव्य-मानव मुठभेड़ों के अनुभव पर जोर देते हैं। वे अक्सर शब्दों के स्थिर सेट के बजाय ईश्वर के ऐतिहासिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने वाले गतिशील प्रकाशन का पक्ष लेते हैं।

इसके अलावा, वे पुराने सिद्धांतों को पवित्रशास्त्र की बहु-रूपी प्रकृति के साथ पूर्ण न्याय से कम मानते हैं। इसी तरह, वे इस दृष्टिकोण के प्रति काफी सहानुभूति रखते हैं कि रहस्योद्घाटन किसी भी तरह से धर्म तक सीमित नहीं है। सामान्य रहस्योद्घाटन और प्राकृतिक धर्मशास्त्र के ईसाइयों के लिए सकारात्मक संभावनाओं के साथ, वे पिछले कुछ समय से अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक सहानुभूति रखते हैं।

स्वाभाविक रूप से, प्रस्तावित रहस्योद्घाटन धर्मशास्त्र के प्रकारों के बीच महत्वपूर्ण अंतर हैं। मोटे तौर पर, 19वीं सदी को उदारवाद के पिता फ्रेडरिक श्लेयरमेकर और 20वीं सदी को नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्र के पिता कार्ल बार्थ द्वारा प्रभुत्व प्राप्त कहा जा सकता है। श्लेयरमेकर के नेतृत्व का अनुसरण करने वाले कुछ लोग ईश्वर के मानवीय अनुभव में रहस्योद्घाटन का स्थान पाएंगे, जो निश्चित रूप से श्लेयरमेकर ने इसे रखा है।

बार्थ जैसे अन्य लोग इस कथित मानव-केंद्रित दृष्टिकोण के खिलाफ प्रतिक्रिया करेंगे और यीशु मसीह को ईश्वर के एकमात्र शब्द के रूप में बोलेंगे, जिसके बारे में शास्त्र गवाही देते हैं। लेकिन कुछ उल्लेखनीय विकल्प भी हैं, जैसे कि वोल्फहार्ड पैननबर्ग जैसे विद्वान, जो इतिहास और परलोक विद्या में रहस्योद्घाटन की बात करते हैं। रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्री एवरी डलेस ने समकालीन धर्मशास्त्र में इस्तेमाल किए जाने वाले रहस्योद्घाटन के कम से कम पाँच मॉडलों का वर्गीकरण सुझाया है।

वह रहस्योद्घाटन को सिद्धांत के रूप में बोलते हैं, जिसमें वे कार्ल हेनरी और अन्य प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक लेखकों को शामिल करते हैं, रहस्योद्घाटन को इतिहास के रूप में, रहस्योद्घाटन को आंतरिक अनुभव के रूप में, रहस्योद्घाटन को द्वंद्वीय उपस्थिति, नव-रूढ़िवाद और नई जागरूकता के रूप में। विविधता के बावजूद, वह एक परिभाषा सुझाते हैं, जो, उद्धरण, संभवतः प्रत्येक मॉडल के कई अनुयायियों को स्वीकार्य होगी। यह रोमन कैथोलिक विद्वान एवरी डलेस है।

उनका सुझाव इस प्रकार है। रहस्योद्घाटन ईश्वर की स्वतंत्र क्रिया है, जिसके द्वारा वह सृजित मस्तिष्कों को, विशेष रूप से यीशु मसीह के माध्यम से, बचाने वाले सत्य का संचार करता है, जैसा कि अपोस्टोलिक चर्च द्वारा स्वीकार किया गया है और बाइबल और विश्वासियों के निरंतर समुदाय द्वारा प्रमाणित किया गया है, उद्धरण समाप्त करें। उनका प्रस्ताव आज रहस्योद्घाटन के अधिकांश उपचारों में पाए जाने वाले कई जोर को सफलतापूर्वक दर्शाता है।

आश्चर्य की बात नहीं है, यह देखते हुए कि ड्यूल्स एक कैथोलिक के रूप में लिखते हैं, उनका जोर चर्च पर अधिक पड़ता है, जबकि इसी प्रोटेस्टेंट खाते में ऐसा नहीं होता। प्रोटेस्टेंट व्यवस्थित धर्मशास्त्र में, विशेष रूप से 20वीं सदी के नव-रूढ़िवादी आंदोलन द्वारा प्रभावित, तीन ऐसे महत्व प्रतीत होते हैं जो काफी हद तक स्थिर रहते हैं क्योंकि विचारकों ने रहस्योद्घाटन को उचित ठहराने और समझाने का प्रयास किया है। इनमें से कुछ लेकिन सभी ड्यूल्स के सारांश में पाए जाते हैं।

प्रत्येक तत्व को इस विश्वास में गढ़ा गया है कि हम अब बाइबल को इस तरह से अपील नहीं कर सकते कि वह स्वयं रहस्योद्घाटन हो, और इसलिए उस दृष्टिकोण के प्रति कुछ प्रतिक्रिया को प्रतिबिंबित करते हैं। और इस व्याख्यान के अगले कुछ मिनटों के लिए, मैं पीटर जेन्सन के नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्र की इन तीन विशेषताओं का सारांश बताने जा रहा हूँ। घटना के रूप में रहस्योद्घाटन, आत्म-समर्पण के रूप में रहस्योद्घाटन, और विशेष रूप से यीशु मसीह के रूप में रहस्योद्घाटन।

रहस्योद्घाटन एक घटना के रूप में। सबसे पहले, पुराने विचारों से सचेत रूप से अलग हटकर, जो रहस्योद्घाटन को बाइबल के शब्दों के साथ पहचानते थे, कई आधुनिक धर्मशास्त्री इस बात पर जोर देते हैं कि रहस्योद्घाटन ईश्वर का एक कार्य है, एक घटना है, एक प्रकरण है। ड्यूल्स रहस्योद्घाटन की अपनी परिभाषा में मुक्त क्रिया वाक्यांश का उपयोग करके इस तत्व को पकड़ने का प्रयास करते हैं।

रहस्योद्घाटन के इस दृष्टिकोण को अपनाने में, धर्मशास्त्री, सबसे पहले, ईश्वर की स्वतंत्रता की रक्षा कर रहे हैं। डैनियल एल. मिग्लियोर बाइबिल के प्रसंगों की बात करते हैं और कहते हैं, "जबकि ईश्वर इन घटनाओं में वास्तव में प्रकट होता है, दिव्य स्वतंत्रता या छिपाव कभी भी भंग नहीं होता है। उनका हवाला देते हुए, ईश्वर रहस्योद्घाटन की घटना में रहस्य बने रहना बंद नहीं करता है। "

19वीं सदी के धर्मशास्त्र की प्रवृत्ति के विपरीत, ईश्वर को आसन्न, उसकी दुनिया में मौजूद मानने के विपरीत, बाद के धर्मशास्त्रियों ने उसकी उत्कृष्टता और इसलिए ईश्वर होने की उसकी स्वतंत्रता पर जोर दिया है। इसमें वे कार्ल बारथ और नव-रूढ़िवाद का अनुसरण करते हैं।

रहस्योद्घाटन को ईश्वर की स्वतंत्र पहल से उत्पन्न एक उपहार के रूप में माना जाना चाहिए और इस प्रकार यह उसकी कृपा और मानवीय आवश्यकता दोनों के अनुरूप है। रहस्योद्घाटन उसके हाथों में है, हमारे हाथों में नहीं। हम इसे नियंत्रित नहीं कर सकते, इसकी मांग नहीं कर सकते, या इसे व्यवस्थित नहीं कर सकते।

अगर हम किसी किताब, यहाँ तक कि बाइबल को भी रहस्योद्घाटन के रूप में पहचानते हैं, तो हम परमेश्वर पर अपना अधिकार जताते हैं और फरीसी दृष्टिकोण अपनाते हैं, जिसमें अक्षर को महत्व दिया जाता है, लेकिन आत्मा को नहीं, कैपिटल एस। रहस्योद्घाटन को एक घटना के रूप में मानने से, हम बाइबल में परमेश्वर के बारे में इस तरह से सोचते हैं जो बाइबल के लिए ज़्यादा सही है। शाश्वत सत्यों की पुस्तिका होने से कहीं ज़्यादा, बाइबल मुख्य रूप से परमेश्वर के शक्तिशाली कार्यों का वर्णन है, जिसके ज़रिए उसने अपने लोगों को बचाया और खुद को उनके सामने पहचाना। रहस्योद्घाटन को एक घटना के रूप में सोचने के दूसरे फ़ायदे भी हैं।

यह उस तरह से भी मेल खाता है जिस तरह से यह अवधारणा अक्सर बाइबल में आती है, चाहे वह ग्रीक या हिब्रू रूप में हो। उदाहरण के लिए, इस शब्द का इस्तेमाल बाइबल में एक किताब के रूप में नहीं किया गया है, बल्कि भगवान और इंसानों के बीच मुठभेड़ में किया गया है जिसके

ज़रिए भगवान खुद को उनके सामने प्रकट करते हैं। इसमें अक्सर एक युगांतिक घटक होता है जिसमें युग के अंत में मसीह के प्रकट होने को रहस्योद्घाटन कहा जाता है।

इसका उपयोग यह वर्णन करने के लिए भी किया जाता है कि ईश्वर दुनिया में क्या कर रहा है, चाहे वह प्राकृतिक दुनिया हो या मानवीय मामलों की दुनिया। व्यक्ति को रहस्योद्घाटन प्राप्त हो सकता है, या यह कुछ ऐसा हो सकता है जो सभी के पास होना चाहिए। इसके अलावा, यह विचार कि रहस्योद्घाटन एक घटना है, बाइबल में पाए जाने वाले विचार से कहीं अधिक व्यापक रूप से इसके बारे में सोचने की आवश्यकता है।

यह रहस्योद्घाटन के अनुभव के विषय को उठाता है, उदाहरण के लिए, ईसाई और गैर-ईसाई दोनों तरह के कई लोगों द्वारा महसूस की जाने वाली ईश्वर की उपस्थिति की भावना, और हमें अन्य धर्मों में रहस्योद्घाटन की रिपोर्टों का पता लगाने में सक्षम बनाता है। यह ईश्वर की आत्मा के वर्तमान प्रकाशमान और प्रेरक कार्य पर जोर देने की भी अनुमति देता है जिसे रहस्योद्घाटन के पहले के सिद्धांतों ने अस्पष्ट कर दिया था। इसलिए, रहस्योद्घाटन के आधुनिक, विशेष रूप से नव-रूढ़िवादी विचारों का पहला जोर यह है कि यह एक घटना है और इसे बाइबल के शब्दों के साथ नहीं पहचाना जाना चाहिए।

दूसरा, यह आत्म-समर्पण है। समकालीन धर्मशास्त्र में, इस सत्य पर भी बहुत कुछ कहा जाता है कि ईश्वर के बारे में हमारा ज्ञान संबंधपरक है। इस बिंदु पर, उगलस की अवधारणा कि ईश्वर, उद्धारण, निर्मित मन को सत्य का उद्धार करता है, उद्धारण बंद करें, को बेकार माना जाएगा क्योंकि यह रहस्योद्घाटन के प्रस्ताव या बौद्धिक दृष्टिकोण को वापस ले जाता है, जिसमें विश्वास को किसी और के अधिकार पर कुछ सत्यों को स्वीकार करने के रूप में माना जाता है, और रहस्योद्घाटन को स्वयं प्रकट सत्यों के एक समूह के रूप में माना जाता है।

जहाँ तक आधुनिक प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र का सवाल है, यह ईसाई धर्म के सच्चे हृदय को गलत समझना है। संक्षेप में, ईसाई धर्म रिश्तों से संबंधित है, और विशेष रूप से ईश्वर और मनुष्यों के बीच मुठभेड़ से। बौद्धिकतावादी विवरण मनुष्यों को एक तरह से दूर रखता है।

हमें सच्चाई के संचार की उतनी ज़रूरत नहीं है जितनी व्यक्तियों के संचार की। यह कोई संयोग नहीं है कि रहस्योद्घाटन का केंद्रीय बिंदु एक व्यक्ति, यीशु मसीह है। ईसाई धर्म का सार उसके साथ हमारा रिश्ता है, न कि मूल रूप से उसके बारे में शब्दों के एक सेट के साथ।

जैसा कि एमिल ब्रूनर ने लिखा और उद्धृत किया है, हम स्वतंत्र हैं; हम यहाँ हैं, अब शब्दों में किसी रिश्ते से नहीं बल्कि व्यक्तिगत रिश्ते से चिंतित हैं। अब हम इस पर विश्वास करने से संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि हमारी चिंता उसके पास आने, उस पर भरोसा करने, उसके साथ एक होने और उसके सामने आत्मसमर्पण करने की है। रहस्योद्घाटन और विश्वास का अर्थ अब एक व्यक्तिगत मुलाकात, व्यक्तिगत संचार, करीबी उद्धारण है।

रहस्योद्घाटन एक घटना है; रहस्योद्घाटन ईश्वर का आत्म-प्रस्तुति, यीशु मसीह के रूप में आत्म-समर्पण रहस्योद्घाटन है। यीशु के व्यक्तित्व ने अब ईसाई रहस्योद्घाटन की सामग्री के

रूप में बाइबिल की जगह ले ली है। रॉबर्ट मॉर्गन के शब्दों में, बार्थ के ईश्वर के वचन के तीन गुना रूप से, केवल देहधारी वचन को ही उचित रूप से दिव्य रहस्योद्घाटन कहा जा सकता है।

परमेश्वर के वचन का उनका तीन गुना रूप मसीह ही वचन है ; व्युत्पन्न रूप से, बाइबल और वचन के उपदेश को भी वचन कहा जाता है। जब रहस्योद्घाटन को बाइबल में अचूक सत्यों का एक समूह माना जाता था, तो सभी प्रकार के विषयों पर एक पाठ्यपुस्तक में बदलने की निरंतर प्रवृत्ति थी। विशेष रूप से, बाइबल नैतिक जानकारी का एक स्रोत थी।

डेकालॉग और बीटिट्यूड्स जैसी सूचियों में, इसने अच्छे जीवन जीने के लिए आसान मार्गदर्शन प्रदान किया। बाइबल को उत्कृष्ट विज्ञान और इतिहास से युक्त माना जाता था, और दोनों क्षेत्रों में प्रगति को इसकी शिक्षा द्वारा परखा जाता था। इसी तरह, भविष्य के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए बाइबल की छानबीन की गई।

ज्ञानोदय द्वारा की गई तबाही, आंशिक रूप से, बाइबल के इस तरह के दुरुपयोग की विरासत थी। इसकी प्रकृति का गलत आकलन इसके शब्दों का दुरुपयोग करने और इसके वास्तविक महत्व की उपेक्षा करने का कारण बना। अगर आधुनिक मुख्यधारा के प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्रियों के लिए एक बात स्पष्ट है, तो वह यह है कि कहीं भी कोई रास्ता नहीं है; लड़के, अगर आधुनिक प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्रियों के लिए एक बात स्पष्ट है, तो वह यह है कि बाइबल को प्राथमिक अर्थ में ईश्वर के प्रेरित और अचूक वचन के रूप में पुनर्स्थापित करने का कोई रास्ता नहीं है।

क्या मुझे अपने श्रोताओं और दर्शकों से यह कहने की ज़रूरत है कि मैं मानता हूँ कि बाइबल ईश्वर का एक अचूक रहस्योद्घाटन है, जो ईश्वर के शब्दों में प्रेरित है, जो मानवीय शब्द भी हैं, जो हमें बाइबल को ईश्वर की कृपा की अभिव्यक्ति के रूप में समझने की ओर ले जाता है, लेकिन यह बाद की बात है। लेकिन मैं इस पर विश्वास करता हूँ। हालाँकि, मुझे लगता है कि यह ऐतिहासिक परिचय हमें सोचने के लिए प्रेरित करने के लिए सार्थक है, हमारे पड़ोसियों और दूसरों की मानसिकता पर विचार करने में सहायक है, और कुल मिलाकर यह हमें विनम्र बनाता है, हमें हमारे स्थान पर रखता है, जिसे हम ईश्वर और पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों के बाइबिल परिचय में और अधिक विस्तार से खोजेंगे।

हालाँकि, यह निष्कर्ष रहस्योद्घाटन की वास्तविक प्रकृति को स्पष्ट करने में सक्षम बनाता है। इसमें बाइबल वास्तव में यीशु मसीह के बारे में है। वह ईश्वर का रहस्योद्घाटन है।

कुछ लोग यह तर्क देना चाहते थे कि वह अकेले ही ईश्वर का रहस्योद्घाटन है और उसके बारे में हर दूसरे कथित रहस्योद्घाटन का अर्थ, सकारात्मक या नकारात्मक रूप से, केवल उससे ही लिया जाता है। अन्य लोग, जैसा कि डुलेस के प्रस्ताव में है, रहस्योद्घाटन के केंद्र के रूप में विशेष रूप से यीशु मसीह के बारे में बात करना पसंद करते हैं। इस प्रकार, कीथ वार्ड भी यीशु में ईश्वर के अवतार को ईश्वर के केंद्रीय रहस्योद्घाटन कार्य के रूप में वर्णित करता है।

ईश्वर के रूप में कार्य, ईश्वर के रूप में आत्म-समर्पण, और ईश्वर के रूप में यीशु। रहस्योद्घाटन ये तीनों ही चीजें हैं। किसी भी मामले में, यह स्पष्ट है कि रहस्योद्घाटन के स्रोतों के रूप में

बाइबल, प्रकृति और चर्च की परंपराओं द्वारा एक बार जो ज्ञानमीमांसा भार वहन किया गया था, वह अब रहस्योद्घाटन के कई खातों में यीशु मसीह द्वारा वहन किया गया है।

वह संदेश है, परमेश्वर का वचन है, यही वह उपाधि है जो यूहन्ना 1, 1 से 3 में उसे दी गई है, जिसके द्वारा अन्य सभी शब्दों का परीक्षण किया जाना है। इस फोकस के कई फायदे हैं। सबसे पहले, इसका लाभ यह है कि यह बाइबल में जो कहा गया है और जिसके बारे में है, उसके अनुरूप है।

प्रथम ईसाई प्रचारकों और नए नियम के संदेश को उचित रूप से यीशु मसीह के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है। इसके अलावा, यह मसीह को स्वयं मध्यस्थ बनाता है, जैसा कि उसे होना चाहिए यदि वह वास्तव में ईश्वर और मनुष्यों के बीच एकमात्र मध्यस्थ है, 1 तीमुथियुस 2:5। वह कोई सहायक संदेशवाहक, मात्र भविष्यवक्ता नहीं है, बल्कि वह स्वयं ईश्वर और मानव दोनों है, ईश्वर का वचन है, जो वह बिंदु है जिस पर हम ईश्वर को देख सकते हैं और जी सकते हैं। दूसरे, यह सर्वोत्तम संभव तरीके से ईसाई रहस्योद्घाटन का बचाव करता है।

यह इसे पहुंच से बाहर कर देता है। अगर यह वास्तव में सच है, तो यह ईश्वर से आता है, जिसे स्वयं परखा या परखा नहीं जा सकता। इसे स्वयं प्रमाणित होना चाहिए, न कि इसके सत्यापन के लिए किसी कमतर सहायता पर निर्भर होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, पवित्र शास्त्रों का बचाव करते समय, हम तुरंत अपने डर को प्रकट करते हैं कि वे ईश्वर से नहीं आते हैं। यीशु मसीह के संबंध में, उनका प्रचार किया जा सकता है और घोषणा स्वयं ही लोगों को समझाएगी, और रहस्योद्घाटन की घटना बन जाएगी, यदि आत्मा ऐसा करने में सक्षम बनाती है। रहस्योद्घाटन को मुख्य रूप से या यहाँ तक कि विशेष रूप से यीशु मसीह में खोजने में महसूस किए जाने वाले मुख्य लाभों में से एक यह है कि यह हमें रहस्योद्घाटन के अन्य दावेदारों के बारे में बात करने का सही तरीका खोजने में सक्षम बनाता है।

हर चीज़ को उसके बारे में हमारे आकलन से मापा जा सकता है। खास तौर पर, यह हमें बाइबल के बारे में सकारात्मक होने में सक्षम बनाता है, साथ ही साथ इसकी वास्तविक प्रकृति के साथ न्याय भी करता है। उलास यह सुझाव देने में सही है कि बाइबल की भूमिका यीशु मसीह के रहस्योद्घाटन को प्रमाणित करना है।

बाइबल को अब अक्सर परमेश्वर के वचन की गवाही के रूप में माना जाता है। इसका मतलब यह है कि हालाँकि बाइबल को परमेश्वर का वचन कहना और यीशु मसीह तक हमें ले जाने में इसकी अपरिहार्य भूमिका का सम्मान करना अभी भी संभव है, लेकिन हम इसे परमेश्वर के साथ पहचानने के खतरे में नहीं हैं, क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर के चरित्र को अपनाने के लिए बाध्य है। बाद में, मैं भजन 119 में दिखाने जा रहा हूँ कि प्रभु स्वयं और परमेश्वर के वचन का वर्णन करने के लिए उन्हीं विशेषणों का उपयोग करता है।

दिलचस्प है। यह माना जाता है कि इस तरह हम बाइबिल की पूजा और बाइबिल के प्रति अनुचित श्रद्धा से बचते हैं और इस खतरे से भी बचते हैं कि बाइबिल का पुराना इतिहास और विज्ञान विश्वास के लिए एक अनावश्यक बाधा साबित हो सकता है। मूल्यांकन।

ठीक है, हमने पानी में हलचल मचा दी है। हम कुछ लकड़ी से भी ज़्यादा काँप चुके हैं, मुझे लगता है, वॉल्टेयर और दूसरे, स्पष्ट रूप से, विधर्मियों से शुरू करते हुए: डेविड ह्यूम, मेरे अच्छेपन से, सबसे महान संशयवादी।

मूल्यांकन। हमें सबसे पहले यह कहना चाहिए कि ऊपर बताए गए रहस्योद्घाटन का विवरण एक महत्वपूर्ण बौद्धिक और धार्मिक उपलब्धि है। कई बार ऐसा लगा कि बौद्धिक रचना के रूप में ईसाई धर्म स्वयं ही गायब हो जाएगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि बाइबल, जिस आलोचना से गुज़री है, उसके अधीन, किसी भी तरह का अधिकार बनाए रखने में सक्षम नहीं है, और ईसाई धर्म या त्रिएकत्व के संबंध में रूढ़िवादिता की कोई भी झलक भी समाप्त हो गई है। बाइबल द्वारा प्रमाणित मसीह की केंद्रीयता पर जोर देकर, ऊपर दिए गए विचारों के समर्थक त्रिएकत्व के सिद्धांत को ईसाई धर्म के केंद्र में वापस लाने में सक्षम हुए हैं। और हम इसके लिए आमीन कह सकते हैं।

जब हम ईसाई रहस्योद्घाटन को देखते हैं और प्राप्त करते हैं, तो हम जानते हैं कि यह स्वयं परमेश्वर का कार्य है, कि यीशु मसीह परमेश्वर का वचन है, और रहस्योद्घाटन का कार्य विशेष रूप से परमेश्वर की आत्मा का कार्य है। इसका मतलब यह है कि जब हम रहस्योद्घाटन में फंस जाते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से त्रिएक परमेश्वर के साथ जुड़े होते हैं। यहाँ, वास्तव में, ईसाई धर्म का एक संस्करण है जिसका प्रचार किया जा सकता है।

यह हमारे बारे में नहीं है, बल्कि ईश्वर और इस बारे में है कि वह कौन है और उसने क्या किया है। यह ईश्वर को उसके होने के लिए सम्मानित करता है और प्यूअरबैक की आलोचनाओं से जूझने का प्रयास करता है कि ईसाई धर्म केवल मानवशास्त्र का एक बड़ा रूप है। दार्शनिक प्यूअरबैक ने कहा कि ईश्वर के बारे में हमारे विचार हमारे अपने विचारों, विशेष रूप से अपने बारे में, इस कथित देवता पर प्रक्षेपण हैं।

और फिर भी, भले ही रहस्योद्घाटन को इस तरह से पुनर्स्थापित किया गया हो, क्या यह परमेश्वर के ज्ञान के साथ न्याय करने में पूरी तरह सफल है? पीटर जेन्सन कहते हैं, मुझे नहीं लगता। उनके इंजीलवादी पट्टियाँ दिख रही हैं। महत्वपूर्ण बिंदुओं पर एक लक्षणात्मक अस्पष्टता है जो हमें उस तरह के ज्ञान से वंचित करती है जिसकी बाइबल हमें उम्मीद कराती है।

धर्मशास्त्रीय विचारक ईश्वर को केंद्र में वापस लाने में सफल रहे हैं, ईश्वर को चीज़ों के केंद्र में वापस लाने में सफल रहे हैं, लेकिन उन्होंने ऐसा उस तरीके से नहीं किया है जो बाइबल में पाए गए ईश्वर के साथ हमारे रिश्ते की प्रकृति को दर्शाता है। एक ईसाई धर्म जो ईश्वर के साथ उसी शर्तों पर संबंध बनाने में असमर्थ है जो हम पवित्रशास्त्र के लेखकों के अनुभव में देख सकते हैं, उसकी वैधता संदिग्ध होनी चाहिए। हम ईश्वर के आधुनिक पुनर्निर्माण की वास्तविकता का परीक्षण यह पूछकर कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, कि क्या यह ईश्वर को विश्वासियों के जीवन पर अधिकार की उसी स्थिति में रखता है जिसे हम नए नियम में ग्रहण करते और सिखाते हुए देखते हैं।

क्या आधुनिक धर्मशास्त्र में जिस रहस्योद्घाटन की बात की गई है, वह ऐसा करता है? जब तक यह इस महत्वपूर्ण परीक्षण को पूरा नहीं करता, तब तक यह शायद ही कहा जा सकता है कि यह ईश्वर के बारे में ऐसा ज्ञान देता है जो पवित्रशास्त्र में उल्लिखित ईश्वर के ज्ञान के साथ स्पष्ट निरंतरता में खड़ा हो। हालाँकि, क्या यह मामला नहीं है कि, सभी आधुनिक विचारों की तरह, धर्मशास्त्र स्वयं ईश्वर के संबंध में मानवीय स्वायत्तता की धारणा को दर्शाता है? क्या आधुनिक धर्मशास्त्र का विश्वास नए नियम के विश्वास के अनुरूप है? रहस्योद्घाटन के आधुनिक विवरण में बहुत कुछ ऐसा है जो सत्य है, विशेष रूप से यीशु मसीह पर जोर, कि कुछ हद तक, इस प्रश्न का उत्तर सकारात्मक में दिया जा सकता है। लेकिन विवरण में एक बुनियादी कमी भी है, जो एक अलग निष्कर्ष की ओर ले जाती है।

पहले विश्वासियों ने पवित्रशास्त्र को परमेश्वर के वचन की गवाही के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर का वचन होने के रूप में माना। और इसलिए, विश्वास को अनिवार्य रूप से उनके विश्वास से अलग रूप लेना चाहिए। उन्होंने गवाह शब्द का इस्तेमाल किया, लेकिन यह प्रेरित की योग्यताओं में से एक था।

जब हम प्रेरितों की बात करते हैं, तो हम एक अलग और अधिक आधिकारिक श्रेणी का उपयोग करते हैं। कुछ विद्वानों द्वारा जॉन बैपटिस्ट को आदर्श गवाह के रूप में इस्तेमाल करना दिलचस्प है। वह एक प्रेरित नहीं था।

प्रकाशितवाक्य के पुनर्निर्माण के तीन मुख्य तत्वों में से प्रत्येक में, पवित्रशास्त्र को परमेश्वर का वचन बनाने की अनिच्छा मुख्य महत्व रखती है। यह निर्णायक मोड़ है। यह निष्कर्षों की प्रकृति को आकार देता है।

मैं उदाहरण देकर समझाता हूँ। हमें बताया गया है कि रहस्योद्घाटन ईश्वर का कार्य है, एक घटना है। तो, यह सच है।

लेकिन इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि विचाराधीन घटनाओं को इस आधार पर सीमित कर दिया जाए कि भाषण देना ऐसी घटना नहीं है जिसके स्थायी परिणाम हों। परमेश्वर के सभी शक्तिशाली कार्यों में, जिनसे हमें पता चलता है कि वे कार्य किए गए थे, वाणी के शक्तिशाली कार्य शामिल थे, जैसे कि माउंट सिनाई में। इसके अलावा, अक्सर यह बताया गया है कि परमेश्वर के कार्य उनके साथ आने वाले व्याख्यात्मक शब्द के बिना समझ से परे हैं।

इससे भी अधिक मौलिक रूप से, किसी घटना को यह तय करके सीमित करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि इसकी प्रासंगिक प्रकृति उस समय पर अपना रहस्योद्घाटन प्रभाव पा सकती है जिस समय यह घटित होती है। इसके विपरीत, भले ही कोई विशेष रहस्योद्घाटन एक विशिष्ट घटना हो, और हमने यहाँ इस संभावना पर विचार नहीं किया है कि रहस्योद्घाटन इतना प्रासंगिक नहीं हो सकता है जितना कि सूर्य, चंद्रमा और सितारों का खड़ा होना, यह उन शब्दों के माध्यम से निरंतर जीवन जीना जारी रख सकता है जो इसका वर्णन करते हैं। एक बार रहस्य उजागर होने के बाद रहस्य ही रह जाता है।

वास्तव में, ईसाई धर्म अनिवार्य रूप से प्रकृति में वचनबद्ध है। फिर यह विचार कि हमारे पास रहस्योद्घाटन में ईश्वर के मायावी प्रासंगिक भाषण कार्य हैं, हालांकि यह ईश्वर की स्वतंत्रता को संरक्षित करने के लिए है, भाषण में उनकी ईमानदारी से समझौता करने का प्रबंधन करता है। एक बार फिर, ईसाई धर्म अनिवार्य रूप से प्रकृति में वचनबद्ध है, अगर यह सच है, जिसके बारे में जेंटियन तर्क देते हैं कि यह सच है।

फिर, यह विचार कि हमारे पास रहस्योद्घाटन में ईश्वर के मायावी प्रासंगिक भाषण कार्य हैं, हालांकि यह ईश्वर के रूप में ईश्वर की स्वतंत्रता को संरक्षित करने के लिए है, भाषण में उनकी ईमानदारी से समझौता करने का प्रबंधन करता है। दूसरे, मैंने जो रहस्योद्घाटन का वर्णन किया है वह आत्म-समर्पण के विचार का पक्षधर है। कोई भी इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि यह अवधारणा एक महत्वपूर्ण सत्य को पकड़ने का प्रयास करती है, अर्थात् ईसाई धर्म की संबंधपरक प्रकृति, और यह कि, कई बार, विश्वास अति-औपचारिकता और बौद्धिकता से पीड़ित रहा है।

लेकिन इस भाषा का उद्देश्य स्पष्ट रूप से रहस्योद्घाटन को प्रेरित भाषा पर निर्भरता से दूर करना है, ताकि किसी व्यक्ति पर विश्वास शब्दों पर विश्वास से अधिक प्राथमिकता ले सके। हालाँकि, मानवीय रिश्तों में भी, भरोसेमंद भाषा ही वह आवश्यक मार्ग है जिसके ज़रिए विश्वास आता है। हमें एक-दूसरे के शब्दों पर भरोसा करने की ज़रूरत है, और हम किसी व्यक्ति पर भरोसा करने और उस व्यक्ति के शब्दों पर भरोसा करने के बीच कोई वास्तविक अंतर नहीं करते हैं।

शब्दों के बिना रिश्ता दरिद्र होता है। अदृश्य ईश्वर के साथ रिश्ते के लिए यह कितना अधिक होना चाहिए? क्या यह अत्यधिक साकार किए गए परलोकवाद का मामला नहीं है? इस जीवन में, हम दृष्टि या अनुभव के बजाय विश्वास से चलते हैं, और ईश्वर का कथित आत्म-समर्पण रिश्ते की तात्कालिकता की बात करता है जो अभी तक हमारा नहीं है। मेरा सुझाव है कि यह एक उम्मीद है कि हम ईश्वर के पवित्र वचन को किसी ऐसी चीज़ से बदल सकते हैं जो ईश्वर के साथ हमारे रिश्ते के साथ न्याय करेगी, लेकिन जो वास्तव में अवास्तविक है।

क्या हम भी पिछली पीढ़ियों से एकत्रित धार्मिक और धार्मिक पूंजी पर नहीं जी रहे हैं, जिनका बाइबल की भाषा के प्रति अलग दृष्टिकोण था? उदाहरण के लिए, क्या हम वास्तव में ऊपर सुझाए गए रहस्योद्घाटन का विश्लेषण करके त्रिएकत्व के सिद्धांत पर पहुँच सकते हैं, या क्या यह वास्तव में पवित्रशास्त्र की सटीक भाषा से उत्पन्न होता है? तीसरा, रहस्योद्घाटन का यह विवरण यीशु मसीह पर केंद्रित है। जैसा कि मैंने पहले ही देखा है, एक धर्मशास्त्र जो इस तरह के फोकस पर नहीं है, वह शायद ही ईसाई हो सकता है। हालाँकि, रहस्योद्घाटन को आलोचनात्मक हमले से बचाने के प्रयास में, मसीह और उनके लिए गवाही देने वाले शब्दों के बीच एक बुनियादी अंतर किया जाता है।

जैसा कि कीथ वार्ड लिखते हैं, "धर्मग्रंथ, कम से कम ईसाई धर्म में, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के मानवीय गवाहों के समूह से बना है, न कि रहस्योद्घाटन की विषय-वस्तु से।" लेकिन जिस मसीह

पर हम भरोसा करते हैं, वह शास्त्र में वर्णित यीशु ही होना चाहिए, कोई और नहीं। उस तक हमारी मौखिक पहुँच में एक विशेष गुण है जो मूल और महत्व में अपरिहार्य है।

वह विकल्प जो यीशु मसीह पर अंतिम रहस्योद्घाटन का बोझ डालता है, लेकिन प्रेरित शब्दों के अलावा किसी और चीज़ के माध्यम से उस तक पहुँच प्रदान करता है, हमें एक बार फिर अंधेरे में छोड़ देता है जहाँ हम सही मायने में प्रकाश की उम्मीद कर सकते हैं। यह और भी अधिक मामला है यदि हम इस दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्ध हैं कि रहस्योद्घाटन एक घटना है। क्या विश्वास केवल इस घटना की गवाही से संतुष्ट है? क्या शब्द और गवाह की काफी उचित, काफी बाइबिल और उचित भाषा ने सुसमाचार और प्रेरित की अधिक मौलिक भाषा पर एक अनुचित प्राथमिकता ले ली है? मैंने हाल के प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र के केवल तीन विषयों पर टिप्पणी करना चुना है।

इस और अन्य सामग्री का सर्वेक्षण करने से दो निष्कर्ष निकलते हैं। सबसे पहले, ईसाई धर्म के लिए ज्ञानोदय और उसके बाद की घटनाओं से उत्पन्न समस्याएँ समाधान की प्रतीक्षा कर रही हैं। रहस्योद्घाटन के इस सिद्धांत के प्रत्येक तत्व में एक दुर्भाग्यपूर्ण और अवास्तविक विभाजन है जो मुख्य रूप से इस विचार को अस्वीकार करने से पैदा हुआ है कि पवित्रशास्त्र के शब्द किसी भी प्रत्यक्ष और रहस्योद्घाटन अर्थ में, परमेश्वर का वचन हो सकते हैं।

जैसा कि मैंने पहले ही संकेत दिया है, ज्ञानोदय के बाद की दुनिया में उस स्थिति को पुनर्स्थापित करने का कार्य वास्तव में कठिन है, लेकिन विकल्प सफल नहीं हुआ है। दूसरे, कुछ प्रगति हुई है, खासकर उन लोगों को चुनौती देने में जिन्होंने पहली बार चुनौती दी थी। मार्क्स, फ्रायड, वोल्टेयर, ह्यूम और यहां तक कि कांट भी अब पहले की तरह चुनौतीपूर्ण नहीं लगते।

यह सच है कि चर्च में विभिन्न दरारें, विशेष रूप से उन लोगों के बीच विभाजन जिनकी रणनीति उदारवादी है और जिनकी रणनीति रूढ़िवादी है, बनी हुई है। लेकिन रहस्योद्घाटन पर जिम्मेदार लेखन 1960 के दशक के अधिक कट्टरपंथी ईश्वर की मृत्यु के समाधानों से पीछे हट गया है। पिछली पीढ़ी द्वारा छोड़े गए कुछ विषयों, जैसे कि प्रस्तावना रहस्योद्घाटन, ने आखिरकार गंभीर ध्यान आकर्षित करना शुरू कर दिया है, और यह मान्यता है कि एक प्रबुद्ध संस्कृति के अंतर्निहित सिद्धांत गहराई से अईसाई और अत्यधिक अमानवीय दोनों हैं।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम पीटर जेन्सन के ऐतिहासिक परिचय को समाप्त करेंगे और रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों के बाइबिल परिचय में प्रवेश करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 1, ऐतिहासिक परिचय, जेन्सन, ईश्वर का रहस्योद्घाटन, ज्ञानोदय और ईसाई प्रतिक्रिया है।